नाम	-	डॉ. मोती लाल शाकार
महाविद्यालय का नाम	-	दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
संकाय	-	कला
पदनाम	-	सहायक प्राध्यापक
विषय	-	भाषाविज्ञान
शीर्षक	-	भाषासंपर्क

भाषासंपर्क

डॉ. मोती लाल शाकार
सहायक प्राध्यापक
भाषाविज्ञान विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

जब दो या अधिक भाषाभाषी आपस में संपर्क में आते हैं तो कई प्रकार की समाजभाषावैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ विकसित हो जाती हैं। इनका कारण कभी तो आवश्यकता होता है और कभी प्रतिष्ठा। उदाहरण के लिए द्विभाषिकता, पिजिन तथा क्रियोल आवश्यकतावश विकसित होते हैं तो भाषाद्वैत के पीछे प्रतिष्ठा की भावना काम करती है। इसके विपरीत कोड-मिश्रण, कोड-अंतरण आदि कुछ ऐसी भी प्रवृत्तियाँ हैं जिनके लिए आवश्यकता और प्रतिष्ठा एक सीमा तक दोनों ही जिम्मेदार हैं। आगे इन प्रवृत्तियों को संक्षेप में लिया जा रहा है।

द्विभाषिकता' (Bilingualism)

'द्विभाषिकता' का अर्थ है दो भाषाओं के प्रयोग की क्षमता। विभिन्न भाषाशास्त्रियों ने द्विभाषिकता को एकाधिक रूपों में पारिभाषित किया है। उदाहरण के लिए एक तरफ़ ब्लूमफ़ील्ड के अनुसार 'द्विभाषिकता' से आशय है 'किसी भाषा के मूल भाषी (Native) की तरह दो भाषाओं का प्रयोग' तो दूसरी तरफ बीनरिख (Veinreich) 'द्विभाषिकता' का अर्थ 'दो भाषाओं का (एक के बाद दूसरी का) प्रयोग' लेते हैं। वास्तविकता यह है कि दो भाषाओं के सभी जाननेवालों में दोनों भाषाओं के प्रयोग की क्षमता मूल भाषाभाषी की तरह नहीं होती या कम-से-कम ही होती है, साथ ही यह भी आवश्यक नहीं है कि दो भाषाओं के जानकार दोनों भाषाओं के प्रयोग में भी सक्षम हों। हो सकता है कि एक के प्रयोग में तो वे पूरी

तरह सक्षम हों किंतु दूसरी का वे प्रयोग न कर सकें, केवल उसे सुन या और पढ़कर समझ सकें। वस्तुतः द्विभाषिकता की कुछ अधिक व्यावहारिक परिभाषा यह हो सकती है कि द्विभाषिकता व्यक्ति की' 'द्विभाषिक क्षमता' है जो प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग प्रकार की होती है। किसी व्यक्ति में दोनों भाषाओं में, भाषा-कौशल के चारों प्रकारों सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना की क्षमता होती है तो किसी में एक भाषा में तो चारों प्रकारों के कौशलों की क्षमता होती है किंतु दूसरी में तीन, दो या केवल एक कौशल की ही क्षमता होती है। साथ ही यह क्षमता भी सभी कौशलों में बराबर नहीं होती। किसीमें अधिक होती है तो किसीमें कम और किसीमें बहुत अधिक तो किसीमें बहुत कम ।

द्विभाषिकता का वर्गीकरण मुख्यतः प्रयोक्ता, परिस्थिति, समाज और क्षमता आदि के आधार पर किया जा सकता है। यहाँ द्विभाषिकता के कुछ प्रमुख प्रकार संक्षेप में लिए जा रहे हैं:

देशगत (National) द्विभाषिकता बनाम व्यक्तिगत (Institutional) द्विभाषिकता : देशगत द्विभाषिकता या बहुभाषिकता का संबंध व्यक्ति से न होकर देश या प्रदेश से होता है। इसमें व्यक्ति तो एकभाषिक होता है किंतु वह जिस देश या प्रदेश में रहता है वह द्विभाषिक या विभाषिक आदि होता है। उदाहरण के लिए स्विट्जरलैंड में प्रायः अधिकांश लोग एकभाषिक हैं किंतु वहाँ तीन राजभाषाओं (फ्रांसीसी, जर्मन, इटैलियन) का प्रयोग होता है। इसके विप-रीत व्यक्तिगत द्विभाषिकता वहाँ होती है जहां व्यक्ति की दो भाषाओं में गति हो। जैसे हिंदीभाषी सुशिक्षित की हिंदी और अंग्रेजी में या उजबेकिस्तान निवासी की उज़बेक और रूसी में।

समाजगत (Social) द्विभाषिकता बनाम व्यक्तिगत (Individual)

द्विभाविकता : पहली में, किसी समाज में दो भाषाओं का प्रयोग होता है किंतु उन भाषाओं के प्रयोग की परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं। जैसे एक भाषा अनौपचारिक परिस्थितियों में प्रयुक्त होती है तो दूसरी औपचारिक परिस्थितियों में। इस तरह इस द्विभाषिकता में एक प्रकार से भाषाद्वैतता (Diaglossia) की स्थिति होती है। आजादी के पूर्व हिंदीभाषी क्षेत्र का सुशिक्षित समाज प्रायः इसी अर्थ में अँग्रेजी और हिंदी जानता था। इसके विपरीत व्यक्तिगत द्विभाषिकता में भाषाद्वैतता की स्थिति नहीं होती। व्यक्ति अपने लिए अपनी भाषा के अति-रिक्त कोई और भाषा (विदेशी या अपने देश की) सीख लेता है और अपनी इच्छा या आवश्यकतानुसार एक या दूसरी का प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए कोई हिंदीभाषी रूसी या तमिल सीख ले तो यही स्थिति होगी।

उच्चवर्गीय (Elite) द्विभाषिकता बनाम सामान्य (General) द्विभाषि-कता: उच्चवर्गीय द्विभाषिकता में सभी लोग द्विमाषी नहीं होते बल्कि केवल उच्चवर्ग के सुशिक्षित लोग ही होते हैं। उदाहरण के लिए रूस में जार के जमाने में फांसीसी और रूसी दोनों का प्रयोग होता था किंतु फांसीसी का प्रयोग केवल उच्चवर्गीय सुशिक्षित ही करते थे। उन्हें व्यवस्थित रूप से फांसीसी की शिक्षा दी जाती थी। इसके विपरीत सामान्य द्विभाषिकता में दूसरी भाषा के लिए शिक्षा नहीं दी जाती और न वह मात्र उच्चवर्ग में होती है। लोग समाज में सुनकर ही दूसरी भाषा सीख लेते हैं। उदाहरण के लिए दिल्ली के काफ़ी हिंदी-भाषी (उच्चवर्गीय, मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय) इसी रूप से पंजाबी भी समझ और बोल लेते हैं। यह द्विभाषिकता सामान्य कही जा सकती है।

प्रेरणाजनित (Instrumental) द्विभाषिकता बनाम अभिन्नतार्थ अजित (Integrative) द्विभाषिकता कभी-कभी व्यक्ति अच्छी नौकरी पाने या समाज में उच्च स्तर तक पहुँचने की प्रेरणा से दूसरी भाषा सीखता है। इसे प्रेरणाजनित

द्विभाषिकता की संज्ञा दी सकती है। इसके विपरीत कभी-कभी व्यक्ति किसी विदेशी भाषासमाज से अपनेको भाषा तथा संस्कृति की दृष्टि से अभिन्न बनाने के लिए दूसरी भाषा अजित करता है जिसे अभिन्नतार्थ अजित द्विभाषिकता कह सकते हैं। उदाहरण के लिए कुछ वर्ष पहले उत्तर प्रदेश में अँग्रेजी विषय छोड़कर लोग केवल हिंदी ही जानकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे थे किंतु इधर तीन-चार वर्षों से विद्यार्थी पुनः अंग्रेजी सीखने लगे हैं क्योंकि उन्होंने देखा है कि अँग्रेजी जाने बिना न तो अच्छी नौकरी मिल पाती है और न सुशि-क्षित समाज में ठीक से उठा-बैठा हो जा सकता है। इंग्लैंड या अमेरिका में वस-कर वहाँ के लोगों से अभिन्न हो जाने की इच्छा वाले भारतीय जब अँग्रेजी सीखते हैं तो अभिन्नतार्थ अजित द्विभाषिकता के ही दर्शन होते हैं।

योजक (Additive) द्विभाषिकता बनाम वियोजक (Substractive) द्विभाषिकता : पहले प्रकार की द्विभाषिकता में दूसरी भाषा एक प्रकार से अतिरिक्त भाषा के रूप में अजित की जाती है। इसका समाज में कोई विशिष्ट प्रकार्य नहीं होता। जैसे कोई हिंदीभाषी ग्रीक या इस्तोनियन पढ़ ले। इसके विपरीत वियोजक या ऊनपरक द्विभाषिकता कुछ जोड़ती नहीं, अपितु घटाती है। इसमें नवाजित भाषा सीखने से पहली भाषा या मातृभाषा का महत्त्व घट जाता है। १८वीं सदी के अंतिम तथा १६वीं सदी के प्रथम चरण में हिंदीभाषी के अँग्रेजी सीख लेने पर उसके लिए अँग्रेजी ही महत्त्वपूर्ण हो जाती थी तथा हिंदी का महत्त्व उसके लिए घट जाता था। विभिन्न परतंत्र देशों में वहाँ की तथा-कथित वर्नाक्यूलर भाषाओं की प्रायः यही स्थिति रही है।

समकक्ष द्विभाषिकता बनाम असमकक्ष द्विभाषिकता: भाषिक क्षमता कीदृष्टि से विद्वभाषिकता दो प्रकार की होती है। जब दूसरी भाषा का ज्ञान पहली के समकक्ष हो अर्थात् दोनों भाषाओं में वक्ता की अच्छी गति हो तो समकक्ष द्विभाषिकता होती है, किंतु यदि दूसरी भाषा में कम गति हो तो उसे

असमकक्ष कहते हैं। पहले प्रकार के व्यक्ति को समकक्ष द्विभाषिक (Coordinate Biling-ual) कहते हैं तथा दूसरे प्रकार के द्विभाषिक व्यक्ति को असमकक्ष द्विभाषिक (Compound Bilingual) ।

सक्रिय द्विभाषिकता बनाम निष्क्रिय द्विभाषिकता: जब व्यवित दोनों भाषाओं को बोल और लिख सके तो सक्रिय द्विभाषिकता होती है किंतु जब एक भाषा केवल सुन और पढ़कर समझ सके तो निष्क्रिय द्विभाषिकता होती है। ऐसे व्यक्ति क्रमशः सक्रिय द्विभाषिक (Active Bilingual) तथा निष्क्रिय द्विभाषिक (Passive Bilingual) कहे जाते हैं ।

स्थायी द्विभाषिकता बनाम अस्थायी द्विभाषिकता : जब व्यक्ति दूसरी भाषा का भी लगातार अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करे तो स्थायी द्विभाषिकता होती है। किंतु यदि वह ऐसा न करे तो अस्थायी होती है। ऐसे व्यक्ति क्रमशः स्थायी द्विभाषिक (Stable Bilingual) तथा अस्थायी द्विभाषिक (Unstable Bilingual) कहलाते हैं।

प्रारंभिक द्विभाषिकता बनाम पूर्ण द्विभाषिकता: पहली में दूसरी भाषा का व्यक्ति को थोड़ा-सा प्रारंभिक ज्ञान होता है किंतु दूसरी में वह ज्ञान पूर्ण हो जाता है। ऐसे व्यक्ति क्रमशः प्रारंभिक द्विभाषिक (Incipient Bilingual) तथा पूर्ण द्विभाषिक (Complete Bilingual) कहलाते हैं। आंशिक (Partial) बनाम पूर्ण (Full) भी प्रायः यही है।